© 2018 IJSRSET | Volume 4 | Issue 7 | Print ISSN: 2395-1990 | Online ISSN : 2394-4099
Themed Section : Engineering and Technology

वैष्णव सम्प्रदाय एवं दार्शनिक–चिन्तन

डॉ0 रजनीश कुमार
वार्ड नं0–06, डुमरा, सीतामढ़ी
बिहार, भारत।

मनुष्य एक चिन्तनशील प्राणी है। आदिकाल से वह अपनी सहज प्रवृत्ति के कारण विश्व के रहस्यों को समझने का प्रयत्न करता आ रहा है। इन रहस्यों को सुलझाने के लिए वह एक अलौकिक, नित्य, पूर्ण, दिव्य एवं सर्वशक्तिमान् सत्ता पर विश्वास भी करता है। इसी सत्ता को वह ईश्वर के नाम से पुकारता है। ईश्वर क्या है, उसके स्वरूप और गुण क्या हैं, इस पर सतत् चिन्तन होता रहा है। धार्मिक व्यक्तियों के लिए ईश्वर स्वयंसिद्ध सत्ता है।

परन्तु, दार्शनिक केवल आस्था या विश्वास पर नहीं चलता। वह उस आस्था का विश्लेषण करता है तथा उसके लिए तार्किक आधार प्रस्तुत करता है। सामान्य व्यक्ति भी अपने विश्वास की तार्किक प्रामाणिकता चाहता ही है। कुछ दार्शनिकों ने ईश्वर की सत्ता को सिद्ध करने के लिए भिन्न–भिन्न प्रमाण दिये हैं, वहीं उसकी सत्ता को अस्वीकार करने वाल दार्शनिकों ने उन तर्कों का खण्डन भी किया है।

ईश्वर की सत्ता, स्वरूप, उसके कार्य तथा जीव और जगत् के साथ उसके सम्बन्ध का लेकर विविध–आयामी चिन्तन भारतीय दर्शन में हुए हैं। परिणामस्वरूप अलग–अलग दर्शनों में ईश्वर की अवधारणा के भिन्न–भिन्न रूप प्राप्त होत हैं।

वैदिक काल में अलौकिक विषयों का प्रतिपादन सहज, सरल एवं अनुभूतिपरक शैली में होता था। परन्तु, ज्यों ही दार्शनिक आस्तिक एवं नास्तिक सम्प्रदायों का उद्भव और विकास हुआ, श्रद्धा एवं विश्वास का स्थान तार्किक विश्लेषण ने ले लिया। चार्वाक, जैन तथा बौद्ध चिन्तकों ने केवल वेद की प्रामाणिकता को अस्वीकार ही नहीं किया अपितु उसके और भी मान्य सिद्धान्तों का, जिनमें ईश्वर प्रमुख हैं का भी तर्क के माध्यम से खण्डन किया। जब नास्तिक एवं

निरीश्वरवादियों ने तर्क का आश्रय लेकर ईश्वर का खण्डन किया तथा जनसामान्य को प्रभावित किया और उनकी आस्था वेद एवं ईश्वर से डावाँडोल होने लगी तब आस्तिक तथा ईश्वरवादी चिन्तकों के लिए यह आवश्यक हो गया कि वे भी श्रद्धा एवं विश्वास के स्थान पर तर्क के ही द्वारा वेद तथा ईश्वर की प्रामाणिकता सिद्ध करें।

वैष्णव सम्प्रदाय में दार्शनिक–चिन्तन का आरंभ तब होता है जब बौद्ध–धर्म के अनीश्वरवादी प्रचार के विरोध में शंकराचार्य अपने श्रेष्ठ प्रमाणित तर्कों द्वारा वेद की प्रतिष्ठा स्थापित करते हुए सम्पूर्ण ब्रह्मांड को ही ब्रह्स्वरूप सिद्ध करते हैं। उनके मत से जीव ब्रह्मस्वरूप है और यह प्रातिभासिक जगत् प्रपंच है, मिथ्या है। 'ब्रह्म सत्यं जगत् मिथ्या', 'जीवो ब्रह्मैव नापरः' तथा 'अयमात्मा ब्रहम', 'अहं ब्रह्मोऽस्मि' इत्यादि कहकर शंकराचार्य ने 'अद्वैतवाद' का प्रचार किया। उन्होंने माया को अनर्विचनीय कहा।

जब जगत् के मिथ्यात्व के बोध से जीवन के प्रति अरूचि होने लगी तब ऐसे समय में रामानुजाचार्य का आगमन हुआ। उनके सिद्धान्त को 'विशिष्टाद्वैतवाद' कहा जाता है। इनके अनुसार ब्रह्म चित् और अचित् से विशिष्ट है। इन्होंने जीव और माया को सत्य कहा। इनका सम्प्रदाय 'श्रीसम्प्रदाय' भी कहलाता है। इनके अनुसार जीव 'श्री' अर्थात् लक्ष्मी की शरण में जा कर ही सगुण ब्रह्म अर्थात् विष्णु तक पहुँच सकता है। रामानुजाचार्य ने जीव के कल्याण के लिए भक्ति को ही सर्वश्रेष्ठ बतलाया।

मध्वाचार्य का सिद्धान्त द्वैतवाद कहलाता है। इनके अनुसार जीव अणुपरिमाण तथा ईश्वर का दास है। जीवों के ऊंच–नीच भाव का कारण तारतम्य है। जोव और ईश्वर में जो भेद दिखाई पड़ता है, वह तात्त्विक है। इनके अनुसार वेद का समस्त तात्पर्य विष्णु ही है। जीव और जगत् परतंत्र है तथा ईश्वर स्वतंत्र है। इन्होंने त्याग, संयम तथा ध्यान आदि का भाव आवश्यक बतलाया है। इनका सम्प्रदाय 'ब्रह्म सम्प्रदाय' भी कहलाता है। इन्होंने ईश्वर की भक्ति के लिए तीन प्रकार की सेवा तथा दस प्रकार के भजन का विधान किया है।

शंकराचार्य ने जिस माया को सत्य और असत्य न कहकर अनिर्वचनीय कहा था, उस माया को वल्लभाचार्य ने सत्य कहकर अपने मत को 'शुद्धाद्वैत' नाम से पुष्ट किया। अर्थात् माया भी बह्म के साथ सत्य है। इनके अनुसार भी जीव नित्य और

अणु है। जीव शुद्ध, संसारी और मुक्त–भेद से तीन प्रकार के हैं। जड़–जगत् की उत्पत्ति तथा विनाश नहीं होता है, उसका केवल आर्विभाव और तिरोभाव ही होता है। इनके अनुसार भक्ति की प्राप्ति भगवत्कृपा से होती है। इनके भक्ति–सिद्धान्त को 'पुष्टिमार्ग' कहा जाता है। यह सम्प्रदाय जीव का ब्रह्म के साथ भेद तथ अभेद दोनों मानता है। अवस्था–भेद ही इसका मूल कारण है। इन्होंने ब्रह्म को निर्गुण के साथ सगुण भी कहा है। जीव और ब्रह्म में अंश–अंशी संबंध है। जीव अल्पज्ञ है, अतः मुक्तावस्था में भी अल्पज्ञता दूर नहीं होती। जीव ईश्वर का अंश होने से नित्य है। भक्ति मुक्ति का साधन है।

चैतन्य महाप्रभु के सम्प्रदाय को 'गौड़ीय सम्प्रदाय' के नाम से जाना जाता है। इनकें सिद्धान्तों का शास्त्रीय रूप वृन्दावन में षड्गोस्वामियों द्वारा तैयार हुआ है। ये श्रीमद्भागवत पुराण को वेदान्त का भाष्य मानते थे। आज गौड़ीय सम्प्रदाय के सिद्धान्तों को समझने के लिए बलदेव विद्याभूषण के भाष्य में वर्णित विचार ही महत्त्वपूर्ण है। इनके अनुसार तत्त्व पाँच हैं – ईश्वर, जीव, प्रकृति, काल और कर्म। ज्ञान का विषय परात्पर ब्रह्म श्रीकृष्ण ही है। जीव अणु और चैतन्य है। मुक्ति के लिए भक्ति आवश्यक है। मुक्ति होने पर भी जीव का पार्थक्य बना रहता है। भक्ति स्वतः ज्ञानस्वरूपा और आनन्द की खान है। 'प्रेम' भाव की घनीभूत स्थिति है। प्रेम प्राप्त करना ही जीव का चरम लक्ष्य है।

स्वामी हरिदासजी के सम्प्रदाय को 'सखि सम्प्रदाय' कहा जाता है। यह सम्प्रदाय निम्बार्क सम्प्रदाय के अन्तर्गत आता है, फिर भी साधन–पद्धति में भिन्नता के कारण इसका कुछ स्वतंत्र सिद्धान्त भी है। इसे 'टट्टी सम्प्रदाय' भी कहते हैं। इस सम्प्रदाय में भक्ति रस को ही सब कुछ समझा जाता है। इस सम्प्रदाय के साधक अपने को कृष्ण–लीला में सम्मिलित होनेवाली सखियाँ मानते हैं।

उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि सभी वैष्णव सम्प्रदायों में समान रूप से ब्रह्म के सगुण रूप की ही विशेष मान्यता है। सबो ने विष्णु के अनेक अवतारों को मानते हुए भी राम और कृष्ण तथा उनकी परम शक्तियों को महत्व दिया है। सभी सम्प्रदायों ने समान रूप से जीव और जगत् की सत्यता स्थापित की है और शंकराचार्य के मायावाद का खंडन किया है। जीव और जगत् की सत्यता को उन्होंने प्रकार–भेद से स्थापित किया है। सभी वैष्णव सम्प्रदायों ने समान रूप से भक्ति को साधना का मार्ग स्वीकार किया है। वैष्णव–सम्प्रदायों में दार्शनिक

चिन्तनभेद के कारण विभिन्न सम्प्रदायों के नाम भी प्रचलित हुए। जैसे–अद्वैत, विशिष्टाद्वैत, शुद्धाद्वैत, द्वैताद्वैत, द्वैत, अचिन्त्यभेदाभेद इत्यादि।

अन्ततः डा0 गुप्त के विचार विशेष उल्लेखनीय है, जो 'राधाबल्लभ सम्प्रदाय : सिद्धान्त और साहित्य' की भूमिका में पृष्ठ 19 पर वर्णित हैं–
''वैष्णव धर्म के विभिन्न मतों में जहाँ दार्शनिकवाद का वैषम्य है, वहॉ आचार–क्रियाओं में भी पार्थक्य है परन्तु, समान रूप से सब वैष्णव मतों ने सगुण भक्ति को साधन–रूप में अपनाया है।''

सन्दर्भग्रन्थ एवं पत्र–पत्रिकाएँः–

1 बह्मसूत्रः रामानुजभाष्य
2 विष्णुसहस्रनामस्तोत्रः शंकरभाष्य
3 गीतगोविन्दः जयदेव
4 वैष्णव धर्मः आचार्य परशुराम चतुर्वेदी
5 भगवत धर्मः आचार्य विनोबा भावे
6 भगवत सम्प्रदायः अचार्य बलदेव अपाध्याय
7 निम्बार्क माधुरीः सं0 ब्रजबिहारी शरण
8 निम्बार्क वेदान्तः आचार्य ललितकृष्ण गोस्वामी
9 The Hindu View of Life : S. Radhakrishan
10 Aspect of Early Vaishnavism: I. Guda
11 क्लयाणः गीता प्रस (गोरखपुर)
12 सन्तवाणी–अंक
13 भक्तचरित–अंक
14 उपासना–अंक
15 भक्ति–अंक
16 हिन्दूसंस्कृति–अंक